ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-०६
दिनांक- मंगलवार,०२ फरवरी, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 17.0 एवं 6.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 96 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 86 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.6 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 0.8 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाष अवधि औसतन 4.0 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 15.6 एवं दोपहर में 18.7 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(3–7 फरवरी, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 03–07 फरवरी, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- अगले ३ दिनों तक मौसम के शुष्क रहने की संभावना है। हलॉकि उसके बाद आसमान में गरज वाले बादल बन सकते है, जिसके प्रभाव से ६–७ फरवरी को उत्तर बिहार के जिलों में कहीं–कहीं हल्की वर्षा या बुंदा–बुंदी हो सकती है।
- पूर्वानुमानित की अवधि अधिकतम तापमान 19 से 21 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। पूर्वानुमानित की अवधि में न्यूनतम तापमान में 3–5 डिग्री सेल्सियस वृद्धि हो सकती है और इसके 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 7 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले तीन दिनों तक पछिया हवा तथा उसके बाद पूरवा हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 65 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- अगले ३–४ दिनों तक मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए किसान हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई करें। अगात राई–सरसों की तैयार फसलों की कटाई करें। 7 फरवरी के आसपास वर्षा की संभावना बन रहीं है। इसे देखते हुए कृषि कार्यो में सावधानी वरते।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई कर लें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के 15 दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें। आलू की फसल में शुरुआती अवस्था से कंद बनने की अवस्था तक यह कीट फसल को नुकसान पहुँचाती है। उपचार हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 से 3 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- बसन्तकालीन ईख, शकरकन्द, गरमा सब्जी की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। अक्टुवर–नवम्बर महीनों मे रोपी गई ईख की फसल में हल्की सिंचाई करे। जो किसान भाई ईख लगाना चाहते हैं, खेत की तैयारी कर बुआई शुरु कर सकते है।
- झुलसा रोग से बचाव के लिए आलू की फसल में रिडोमिल नामक दवा का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। खेतों में नमी को देखते हुए आवश्यकतानुसार सिंचाई वर्षा ना होने पर करें।
- सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाइ वर्षा ना होने पर करें। गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगराणी करे। इस कीट के मैगट बीजों को खाते है। जिस स्थानों पर मैगट खातें है, वहॉ कवक एवं जीवाणु उत्पन हो जाते है। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नही रह जाते है और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई करें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के 15 दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें।
- ऐसे बाग जिसमें निकट भविष्य में फूल आनेवाले हो उसमें इमिडाक्लोप्रीड (17.8 SL) / 0.5 मिली / लीटर एवं हेक्सा कॉनाजोल (हेककॉनाजोल) 1 मिलीलीटर / लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से क्रमशः हापर एवं चूर्णिल आसिता के साथ साथ अन्य फफूंद जनित रोगों की उग्रता में कमी आती है।
- आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना को देखते हुए किसान अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में दीमक, मधुआ एवं दहिया कीटों तथा पौउड्री मिल्डेव रोग की निगरानी करे।
- जुलाई में लगाये गये पपीता में हल्की गुड़ाई करने के बाद प्रति पौधा 100 ग्राम यूरिया, 50 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें।
- केला की सुखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर खेत से बाहर करें जिससे रोग की उग्रता में कमी आयेगी। हल्की गुड़ाई करने के बाद प्रति केला 200 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें।
- रबी मक्का की फसल जिसमें धनबाल एवं मोचा आ गई हो, 40 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन वर्षा उपरान्त करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 1.25 किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं 12.5 किलोग्राम युरिया को 500 लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें। दीमक कीट का प्रकोप फसल में दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर खड़ी फसलों में समान रूप से व्यवहार मौसम साफ रहने पर करें।
- दुधारु पशुओं को पुआल का मोटा बिछावन लगावें एवं खिड़की, दरवाजे पर बोरा लगाएं। खाने में तेलहन अनाज को पीसकर दें एवं सेंधा नमक 50 ग्राम प्रति दिन दें। हरा चारा के साथ सूखा भुसा आवष्य मिलाए। दुधारु एवं गाभीन गायों को प्रति दिन 1 किलोग्राम अतिरिक्त दाना मिश्रण दें। साफ एवं गुनगुना पानी पुरे दिन पिलाए।

आज का अधिकतम तापमानः 21.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 3.0 डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः 7.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.1 डिग्री कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी